

डॉ. रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 23

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय और टेड हिल्डेब्रांट

इब्राहीम वाचा - जनरल 15, 17 और अकेदा (जनरल 22)

जेनेसिस 15 और द स्मोकिंग फर्नेस जेनेसिस 15 के बारे में मैं जो कहना चाहता था, मैं लगभग उस निष्कर्ष पर पहुंच गया हूँ। हालांकि, आगे बढ़ने से पहले, मैं आपको मेरेडिथ क्लाइन्स की किताब, *बाय ओथ कंसाइन्ड से एक बयान पढ़कर सुनाऊंगा*। यह उस धूम्रपान भट्टी के संबंध में है जो यहां उत्पत्ति 15 में वाचा के अनुसमर्थन संस्कार में जानवरों के मारे गए हिस्सों के बीच से गुजरी थी। *बाय ओथ कंसाइन्ड के पृष्ठ 45 पर*, क्लाइन कहते हैं: "उत्पत्ति 15 हमें एक वाचा काटने के बारे में बताता है और एक थियोफनी जिसे इब्राहीम ने अंधेरे और भय के बीच देखा, इस पुराने नियम के गोलगोथा के लिए एकमात्र उचित सेटिंग थी। वहाँ इस अंश में भगवान धुएँ की भट्टी और खंडित प्राणी के बीच धधकती मशाल के विभाजित थियोफैनिक प्रतीक में, भगवान के पुत्र के परित्याग का रहस्य पहले ही उभर आया था। क्योंकि इब्राहीम ने जो देखा वह वाचा के प्रभु का अजीब आत्म-द्वेष था, जो अपने सेवक को परमानंद की प्रतिज्ञा की गई पूर्णता में ले जाने में विफल होने के बजाय खुद को अलग करने के वाचा के अभिशाप से गुजरना होगा।

वादा किए गए देश का विस्तार

उन्होंने इस पर बहुत अधिक विस्तार से चर्चा की है, लेकिन यह उनके द्वारा किए गए उपचार के केवल कुछ वाक्य हैं। यह परिच्छेद में एक अंतर्दृष्टि है जो न केवल यह समझने में सहायक है कि परिच्छेद में क्या चल रहा है, बल्कि इसे पवित्रशास्त्र के बड़े संदर्भ में भी रखा गया है।

उस अनुच्छेद (उत्पत्ति 15) के साथ आगे बढ़ने के लिए, श्लोक 18 में, आप अब्राहमिक वाचा के भूमि पहलू पर वापस आते हैं; पद 18 में आपने पढ़ा, "उसी दिन यहोवा ने इब्राहीम से यह कहकर वाचा बान्धी, 'मैं ने मिस्र की नदी से लेकर परात नदी तक का देश तेरे वंश को दिया है।' इस प्रकार भूमि की सीमाएँ निर्दिष्ट की जाती हैं। यदि आप पुराने नियम में आगे बढ़ते हैं, तो आप पाते हैं कि जब मूसा मोआब के मैदानों में आता है, जहाँ इस्राएल प्रतिज्ञा की हुई भूमि लेने वाला था, तो आप

व्यवस्थाविवरण 1:7 में पढ़ते हैं, " तुम मुड़ो, और अपनी यात्रा करो, और जाओ एमोरियों के पर्वत, और उसके आस-पास के सब स्थानों में, और मैदान में, और पहाड़ियों में, और घाटी में, और दक्षिण में, और समुद्र के किनारे, कनानियों के देश तक, और लबानोन तक बड़ी नदी, परात नदी।" तो आपको वही सीमाएँ मिलेंगी जो मूसा द्वारा दोहराई गई थीं जैसा कि इब्राहीम से वादा किया गया था। वह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की शुरुआत है। इसे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक 11:24 में आंतरिक रूप से दोहराया गया है। फिर जब मूसा मर जाता है और यहोशू राष्ट्र का नेतृत्व करने के लिए उसके पीछे चलता है, और उन्हें देश में लाता है, तो आप यहोशू 1:4 में पाते हैं, "जंगल और इस लबानोन से लेकर महान नदी, परात नदी तक, सारी भूमि हित्तियों और सूर्य के अस्त होने की ओर बड़े समुद्र तक तुम्हारी सीमा ठहरेगी। तो, आपको वहां भी पुनरावृत्ति मिलती है।

यह वादा जोशुआ की विजय के तहत आंशिक रूप से पूरा हुआ। आपने यहोशू 13:1-6 में पढ़ा कि भूमि ले ली गई - अर्थात् कनान भूमि। लेकिन उस बिंदु पर, क्षेत्रों के संबंध में, यह "हमात के प्रवेश द्वार" के लिए कहता है, जो काफी दूर उत्तर में है। लेकिन, जैसा कि हम यहोशू 13:1 में पढ़ते हैं, "कब्जा करने के लिए बहुत सी भूमि है।" उन जनजातीय क्षेत्रों में से प्रत्येक में एक काम किया जाना बाकी था, भले ही मूल क्षेत्र नियंत्रित था।

इसलिए जब आप न्यायियों की पुस्तक के पहले अध्याय में आते हैं, तो आप विभिन्न जनजातियों के बारे में पढ़ते हैं: बिन्यामीन ने यबूसियों को बाहर नहीं निकाला, मनश्शे ने विभिन्न स्थानों के निवासियों को बाहर नहीं निकाला, एप्रैम ने बाहर नहीं निकाला। कनानियों, ज़ेबुलोन ने नहीं किया, आशेर ने नहीं किया। सामान्य तस्वीर यह है कि उन्होंने वास्तव में काम पूरा नहीं किया। यह तब तक नहीं है जब तक कि दाऊद 2 शमूएल 8 में फरात नदी पर सेना तैनात नहीं कर देता, तब तक आपको वास्तव में उस वादे की पूर्ति नहीं मिलती। 2 शमूएल 8:3 कहता है, "दाऊद ने सोबा के राजा रहोब के पुत्र हददेजेर को उस समय मारा, जब वह परात नदी पर अपनी सीमा को पुनः प्राप्त करने गया था। और दाऊद ने उस से एक हजार रथ, और सात सौ सवार ले लिये, और इस प्रकार चौथा भी। उसने अन्य स्थानों पर सेनाएँ तैनात कीं, जिसके बारे में आप 2 शमूएल 8 में पढ़ते हैं।

जब आप 1 राजाओं के पास जाते हैं और सुलैमान दाऊद का उत्तराधिकारी होता है, तो

आप 1 राजा 4:21 में पढ़ते हैं, "सुलैमान ने नदी से लेकर पलिशियों के देश और मिस्र की सीमा तक के सभी राज्यों पर शासन किया: वे उपहार लाते थे, और सेवा करते थे सुलैमान अपने जीवन भर जीवित रहा।" "नदी" का तात्पर्य फ़रात नदी से है। यदि आप श्लोक 24 में जाते हैं, तो आप पढ़ते हैं, " क्योंकि उसका तिपसा से लेकर गाजा तक, नदी के इस पार के सारे क्षेत्र पर अधिकार था।" तिप्सा परात नदी पर एक नगर है। इस प्रकार दाऊद तिपसा से लेकर मिस्र तक राज्य करता रहा। मुझे ऐसा लगता है कि यह उस समय इब्राहीम से किए गए वादे की एक अस्थायी पूर्ति है कि वह उस क्षेत्र पर कब्जा कर लेगा। निःसंदेह, दाऊद ने इसे धारण नहीं किया और सुलैमान, जिसे दाऊद का राज्य विरासत में मिला, इस समय राजा था।

ऐसा कहा जाता है कि यह वाचा उत्पत्ति 15 तक जाती है। सीमाएँ उत्पत्ति 17:7-8 में दी गई हैं, जहाँ भूमि का फिर से उल्लेख किया गया है। श्लोक आठ के अंत में, यह कहा गया है कि कनान की सारी भूमि "सदा के अधिकार के लिए" दी जाएगी; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा।" इसलिए इब्राहीम के वंशजों से संबंधित भूमि का वादा तब तक वैध रहेगा जब तक इब्राहीम वाचा अस्तित्व में रहेगी। यह उत्पत्ति 17 के छंद 7 और 8 में इब्राहीम वाचा के साथ व्यापक है।

यहां यिर्मयाह 31:35-36 में एक दिलचस्प संदर्भ है, जो कहता है, " यहोवा यों कहता है, जो दिन को प्रकाश देने के लिये सूर्य को, और रात को प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा और तारागण को विधियां देता है, जो बांटता है।" समुद्र जब उसकी लहरें गरजती हैं। सेनाओं का यहोवा उसका नाम है; यहोवा की यही वाणी है, यदि वे विधियां मेरे साम्हने से दूर हो जाएं, तो इस्राएल का वंश भी मेरे साम्हने सदा के लिथे जाति न रह जाएगा। स्पष्ट तात्पर्य यह है, चूँकि सूर्य और चंद्रमा चमकना बंद नहीं करेंगे, तो इज़राइल प्रभु के सामने एक राष्ट्र बनने से नहीं रुकेगा। जब तक दिन और रात का सिलसिला बना रहेगा, तब तक यह राष्ट्र, इस्राएल, परमेश्वर की प्रजा बना रहेगा।

इसलिए, एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल की निरंतरता सूर्य के उदय और अस्त के निर्माण नियमों से जुड़ी हुई है। यदि आप उत्पत्ति 8:22 पर वापस जाते हैं, तो आप नूह के साथ उस वाचा के संबंध में पढ़ते हैं, "जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बीज बोने और फसल काटने का समय, और सर्दी और गर्मी, और गर्मी और सर्दी, और दिन और रात न मिटेंगे" . इसलिए भूमि का वादा और इस्राएल राष्ट्र की निरंतरता दोनों कुछ ऐसी चीज़ है जो भविष्य में अनिश्चित काल तक जारी रहेगी।

इब्राहीम और नई वाचा

इससे यह सवाल उठता है कि आप पुरानी और नई वाचा की अवधि के बीच इब्राहीम वाचा के प्रशासन को कैसे जोड़ते हैं; आप वास्तव में इसके साथ अनुबंधित धर्मशास्त्र के मुद्दों में शामिल हो जाते हैं। अनुग्रह की वाचा की एक व्यापक एकता है जिसे नए नियम की अर्थव्यवस्था की तुलना में पुराने नियम की अर्थव्यवस्था में अलग तरह से प्रशासित किया जाता है। वह वाचा शाश्वत बनी रहती है क्योंकि वह टेस्टामेंट को पार करती है और उससे आगे निकल जाती है। इसका प्रशासन अलग-अलग होता है, और वहाँ, आप खतना और बपतिस्मा के बीच संबंध के इस प्रश्न पर पहुँचते हैं। और मैं बपतिस्मा को खतना के प्रतिरूप के रूप में जारी रखूंगा। यदि आप पॉल के कथन को लेते हैं कि मध्य दीवार का विभाजन मिटा दिया गया है और यहूदी और गैर-यहूदी अब मसीह में एक हैं, और पुरुष और महिला, स्वामी और दास, यहूदी और गैर-यहूदी के बीच के भेद मिट गए हैं, तो एक निश्चित अर्थ है कि ये भेद हैं नई अर्थव्यवस्था में अब मसीह के शरीर के भीतर लागू नहीं होगा। लेकिन, दूसरी ओर, एक और अर्थ है जिसमें वह भेद मौजूद रहता है; यद्यपि आप जानते हैं कि मसीह में पुरुष और स्त्री एक हैं, फिर भी पुरुष और स्त्री के बीच अंतर है। भले ही यहूदी और अन्यजाति मसीह में एक हैं, फिर भी उन लोगों के बीच अंतर हो सकता है जो शरीर से इब्राहीम के बीज हैं, और जो नहीं हैं, जो आध्यात्मिक बीज हैं। उस आध्यात्मिक बीज में हम सभी एक हैं, लेकिन मेरा मानना है कि भौतिक बीज में अभी भी एक अंतर है।

उत्पत्ति 17 वाचा का नवीनीकरण और पुष्टि की गई

ठीक है, आइए उत्पत्ति 17 पर चलते हैं। यह इब्राहीम के प्रति परमेश्वर की वाचा से संबंधित तीसरा अंश है। उत्पत्ति 17:1-8 में हम पढ़ते हैं: “और जब अब्राम नब्बे वर्ष का और नौ वर्ष का हुआ, तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर कहा, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ; मेरे सामने चलो, और सिद्ध बनो। और मैं तुम्हारे और अपने बीच वाचा बान्धूंगा, और तुम को बहुत बढ़ाऊंगा। और अब्राम मुंह के बल गिर पड़ा; और परमेश्वर ने उस से बातें की, और कहा, सुन, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी है, और तू बहुत सी जातियों का मूलपिता ठहरेगा। तेरा नाम फिर अब्राम न रखा जाएगा, परन्तु तेरा नाम

इब्राहीम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है। और मैं तुझे बहुत फलवन्त करूंगा, और तुझ से जातियां उत्पन्न करूंगा, और तुझ में से राजा उत्पन्न होंगे। और मैं तेरे और तेरे पश्चात् तेरे वंश के बीच भी पीढ़ी पीढ़ी में युग युग की वाचा बान्धता रहूंगा, कि मैं तेरे लिये भी परमेश्वर रहूंगा, और तेरे पश्चात् तेरे वंश के लिये भी परमेश्वर रहूंगा। और मैं तुम्हें और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को वह सारा कनान देश दूंगा जिस में तुम परदेशी हो; कि वह सदा की निज भूमि हो; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा।”

अध्याय 17 में आपके पास अनुबंध की पुष्टि और नवीनीकरण है। इसे प्रारंभ में अध्याय 12 में प्रस्तुत किया गया है, अध्याय 15 में अनुसमर्थित किया गया है, और यहां अध्याय 17 में इसकी पुष्टि और नवीनीकरण किया गया है। अनुबंध से संबंधित सामग्री की इस प्रकार की पुनरावृत्ति उन चीजों में से एक है जिसके साथ स्रोत आलोचक काम करते हैं और कहते हैं, "यहां हमारे पास दोहराव है," और वे उत्पत्ति 17 को पी दस्तावेज़ और उत्पत्ति 15 को जे दस्तावेज़ मानते हैं। जे अधिक आदिम है, 17 अधिक परिष्कृत है, कम से कम उनके विचार में, और आपके पास विभिन्न स्रोतों के परिणामस्वरूप ये दोहराव हैं। लेकिन इसके लिए उस तरह की किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, यह सिर्फ इतना है कि प्रभु इब्राहीम से बार-बार इन वादों की पुष्टि कर रहे हैं।

अब्राहम से इब्राहीम

उत्पत्ति 17: 1 में कहा गया है, "जब अब्राहम 99 वर्ष का था।" यह इश्माएल के जन्म के 13 वर्ष बाद की बात है। आपने अध्याय 16 के अंत में पढ़ा, "जब हाजिरा ने इब्राहीम से इश्माएल को जन्म दिया तब अब्राहम चार अंक और छह वर्ष का था। तुम्हें स्मरण है कि इश्माएल का जन्म सारा से नहीं, बल्कि सारा की दासी हाजिरा से हुआ था।" अब 13 साल बीत चुके हैं और अभी भी सारा से उनका कोई बेटा नहीं है। यदि आप उत्पत्ति 12 पर वापस जाएं, तो वंश के मूल वादे को 24 साल हो गए हैं। जब वह 99 साल का हो जाता है, चौबीस साल बाद, प्रभु कहते हैं, "मेरे सामने चलो, परिपूर्ण बनो।" "संपूर्ण" को उस तरह से नहीं समझा जाना चाहिए जिस तरह से हम इसे नैतिक पूर्णता के रूप में समझते हैं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन जीना, प्रभु के प्रति आज्ञाकारी होना और प्रभु के सामने विश्वास में चलना है। वह कहता है, मैं अपनी वाचा बान्धूंगा, और तुम को बहुत बढ़ाऊंगा। श्लोक पाँच में

उन्होंने विस्तार से कहा, "तुम्हारा नाम अब्राम नहीं, बल्कि इब्राहीम कहा जाएगा।" अब्राम की व्युत्पत्ति या अर्थ, संक्षिप्त रूप, कुछ हद तक विवादित है। लेकिन अधिकांश लोग महसूस करते हैं कि यह दो कारकों से संबंधित है: *एब*, जिसका अर्थ है "पिता," और *राम*, जिसका अर्थ है "उच्च होना" या "ऊंचा होना।" ताकि यह विचार हो कि "पिता महान है।" उस मामले में पिता, जिसे हिब्रू नामों में थियोफोरिक कहा जाता है, ईश्वर का संदर्भ है। तो, भगवान महान है। ईश्वर पिता है। यदि यह एक थियोफोरिक नाम है, और यदि पहला तत्व ईश्वर को संदर्भित करता है, तो नाम का अर्थ ईश्वर ऊंचा है। इब्राहीम *अब* और *रहम* से आया है- *रहम* का अर्थ है "एक बड़ी संख्या", इसलिए यह नाम "बहुतों का पिता" बन गया। वहां पिता का तात्पर्य ईश्वर से नहीं, बल्कि अब्राहम से है, इसलिए उसका नाम अब्राम से बदलकर "ईश्वर महान है", अब्राहम, "कई राष्ट्रों का पिता" हो गया है, इसलिए इसे उसकी असंख्य संतानों के संबंध में रखा गया है। श्लोक 6 में कथन पर ध्यान दें कि "राजा उसमें से निकलेंगे।" वादा किया गया है कि इसके भीतर रॉयल्टी विकसित की जाएगी। निस्संदेह, यह वह विषय बन गया है जिसे बाद में उठाया गया और विस्तृत किया गया, न केवल उत्पत्ति में बल्कि बाद में पुराने नियम में अन्य स्थानों पर भी।

चौथी वाचा की पुनरावृत्ति - उत्पत्ति 22:17-18

चौथा वाचा दोहराव वाला मार्ग उत्पत्ति 22:17-18 है। उत्पत्ति 22 इब्राहीम को इसहाक को बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए प्रभु के आदेश की कहानी बताती है। यह प्रतिज्ञा के पुत्र इसहाक के जन्म के बाद है, और यह इब्राहीम के लिए विश्वास की वास्तविक परीक्षा है, जिसके बारे में हम बाद में चर्चा करेंगे। लेकिन इब्राहीम उस संदर्भ में अपना विश्वास प्रदर्शित करता है और जब आप छंद 16-18 तक पहुंचते हैं, तो आप पढ़ते हैं: "मैंने अपनी ही शपथ खाई है," प्रभु कहते हैं, "क्योंकि तू ने यह काम किया है, और अपने पुत्र को रोक नहीं रखा, इकलौता बेटा। कि मैं तुझे आशीर्वाद देकर आशीष दूंगा, और तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान बहुत बढ़ाऊंगा; और तेरा वंश अपने शत्रुओं के फाटक का अधिकारी होगा; और पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण आशीष पाएंगी; क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।"

तो आपके पास छंद 17 और 18 में इब्राहीम वाचा के उन केंद्रीय तत्वों की पुनः पुष्टि है, विशेष रूप से "तुम्हारे बीज में पृथ्वी के सभी राष्ट्र धन्य होंगे।" दिलचस्प बात यह है कि वह दो बयानों के साथ संलग्न है। पद 16 में, "क्योंकि तू ने यह काम किया है," फिर पद 18 के अंत में, "और पृथ्वी की सारी जातियां तेरे वंश के कारण आशीष पाएंगी; क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।" वह "क्योंकि" कुछ कठिन धार्मिक प्रश्न उठाता है। आप इसे "क्योंकि" कैसे समझाते हैं? क्या अंततः मसीह का वादा इब्राहीम की आज्ञाकारिता पर निर्भर है?

अब्राहम की प्रतिक्रिया - आज्ञाकारिता अधिकांश टिप्पणियाँ "क्योंकि" पर चर्चा नहीं करती हैं। आप अधिकांश टिप्पणियों में इसे देख सकते हैं और वहां कुछ भी नहीं है, जो अक्सर तब होता है जब आपके सामने वास्तविक कठिन प्रश्न आते हैं। टिप्पणियाँ वहाँ आपकी सहायता नहीं करतीं। लेकिन केल्विन की टिप्पणी में, हमारे नोट्स के पृष्ठ 13 पर दो तिहाई नीचे, केल्विन की टिप्पणी खंड एक के पृष्ठ 572, केल्विन का सुझाव है कि "इन ग्रंथों की भाषा का उद्देश्य हमारे कार्यों और इब्राहीम के कार्यों को स्थानांतरित करके हमें पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है।" . इस मामले में, जो उचित रूप से हमारा है वह शुद्ध उपकार है।" केल्विन का सुझाव कम से कम हमें सही दिशा की ओर इशारा करता है। वह कहते हैं, "हमें अवश्य ही यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि जो मुफ्त में दिया जाता है उसे कार्यों का प्रतिफल कहा जाता है।" फिर बाद में वह कहता है, "परमेश्वर कर्ज़ के रूप में कुछ भी नहीं चुकाता, बल्कि अपने फायदे के लिए इनाम की उपाधि देता है।" ऐसा प्रतीत हो सकता है कि केल्विन जो कह रहा है वह एक प्रकार का शब्दावली समाधान है: "जो स्वतंत्र रूप से दिया जाता है उसे कार्यों का पुरस्कार कहा जाता है। ईश्वर कर्ज़ के रूप में कुछ भी नहीं चुकाता, बल्कि अपने लाभ को पुरस्कार का नाम देता है।" अर्थात्, परमेश्वर के लाभ वास्तव में कोई पुरस्कार नहीं हैं; वे केवल हमारी भक्ति की खोज में प्रेरणा के लिए नामित हैं।

हालाँकि यह मामला प्रतीत हो सकता है, और यदि अंतर केवल एक लेबल का है, तो केल्विन वास्तव में सुझाव दे रहा है कि ये ग्रंथ प्रस्तावित करते हैं कि भगवान ने वास्तव में इब्राहीम और उसकी आज्ञाकारिता को वादे के प्रचार में शामिल किया था। और यहाँ महत्वपूर्ण अंतर है: ईश्वर ऐसा कुशल कारण या मेधावी पुरस्कार के अर्थ में नहीं करता है, बल्कि वादे के प्रशासन के

दैवीय रूप से निर्धारित साधनों के अर्थ में करता है। दूसरे शब्दों में, इब्राहीम की आज्ञाकारिता प्रतिज्ञा के प्रशासन के दैवीय रूप से निर्धारित साधनों में शामिल है। यह कोई सराहनीय कारण नहीं है, यह कोई कारगर कारण नहीं है, लेकिन इसमें शामिल है। तब, इब्राहीम की वफ़ादारी, उसके जीवन में क्रियाशील ईश्वर की कृपा का फल थी, जो किसी भी तरह से वादे के प्रतिफल के योग्य नहीं थी, लेकिन फिर भी जो वादे के प्रचार में एक अभिन्न विशेषता थी। निश्चित रूप से ईश्वर द्वारा इब्राहीम का चुनाव और उससे किया गया वादा उसके विश्वास और आज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया से पहले था; यह इस बिंदु पर वर्षों-वर्ष पीछे चला जाता है। लेकिन इब्राहीम के चुनाव ने, कम करने के अर्थ में, उसकी प्रतिक्रिया के महत्व को नहीं रोका। बल्कि, इसने इसे उनके जीवन में दैवीय अनुग्रह के कार्य की अपरिहार्य संगत के रूप में शामिल किया। जैसा कि पाठ में कहा गया है, यह इब्राहीम की आज्ञाकारिता और वादे की घोषणा के बीच संबंध को समझाने का एक प्रयास प्रतीत होता है। तो उस अर्थ में, मुझे लगता है कि केल्विन सही है जब वह कहता है, "भगवान कोई ऋण नहीं चुकाता, बल्कि अपने लाभ के लिए पुरस्कार का शीर्षक देता है।" यह परमेश्वर ही है जो इब्राहीम में कार्य कर रहा है और उसे विश्वास में प्रतिक्रिया देने में सक्षम बना रहा है, यहाँ तक कि उत्पत्ति 22 में उसके विश्वास की इस परीक्षा के बिंदु तक भी।

अभी हाल ही में मैंने कुछ ऐसा पढ़ा जिसने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। मेरेडिथ क्लाइन, जिन्होंने *बाय ओथ कंसाइन्ड लिखा था, एक तीन खंड सेट, किंगडम प्रोलॉग* लेकर आए हैं, जो एक पुराने नियम के धर्मशास्त्र की शुरुआत है जो निजी तौर पर मुद्रित होता है। यह गॉर्डन-कॉनवेल थियोलॉजिकल सेमिनरी के माध्यम से उपलब्ध है। वह इन ग्रंथों से निपटता है, और वह दावा करता है कि इस बात का सराहनीय आधार है कि इब्राहीम का विश्वास यहां वादे के प्रचार में शामिल है। मुझे यह कठिन लगता है, लेकिन ऐसा लगता है कि यह सराहनीय नहीं है; यह उनके जीवन में ईश्वर की कृपा और कार्य का प्रमाण और प्रदर्शन है।

ईश्वर की संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी

आपको सावधान रहना होगा कि आप इस तरह की चीजों को कैसे तैयार करते हैं, क्योंकि आप खुद को एक काल्पनिक प्रकार की स्थिति में डाल रहे हैं जो सैद्धांतिक रूप से उन चीजों को

अलग करने की कोशिश करता है जिन्हें हम अलग नहीं कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, आप दैवीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी और चुनाव और उसके संबंध में भगवान की संप्रभुता की इस पूरी चीज़ में हैं। "जिन्हें संसार की उत्पत्ति से पहले मसीह में चुना गया था": क्या वे कभी खो सकते हैं? खैर, एक अर्थ में आप कह सकते हैं कि यदि वे सुसमाचार का जवाब नहीं देते हैं, तो वे खो जायेंगे, हाँ। लेकिन दूसरे अर्थ में आप कह सकते हैं कि उन्हें खोया नहीं जा सकता; वे मसीह में हैं जो जगत का आधार है। वे सुसमाचार का उत्तर देने जा रहे हैं। आप यह सब कैसे सुलझाते हैं यह बहुत कठिन है; एक निश्चित बिंदु पर आपके लिए बेहतर होगा कि आप पीछे खड़े रहें और उस प्रकार के मुद्दों के संबंध में पवित्रशास्त्र के कथनों को अपने आप खड़े रहने दें, बिना उन्हें उस बिंदु तक विच्छेदित करने का प्रयास किए जहां आप तार्किक रूप से सब कुछ प्रस्तुत कर सकें और उसे समझा सकें। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे बिंदु हैं जिन्हें आप पूरी तरह से समझ या समझा नहीं सकते हैं। जब आप ऐसा करने का प्रयास करते हैं, तो आप आम तौर पर एक पक्ष को दूसरे पक्ष से विकृत करने में पड़ जाते हैं।

निःसंदेह तब आप पूछ सकते हैं, "क्या आपके पास कोई बुनियादी विरोधाभास है?" मैं कहूंगा "नहीं।" ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि दैवीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी के बीच विरोधाभास है। लेकिन साथ ही, मैं यह भी नहीं कह रहा हूँ कि मैं यह बता सकता हूँ कि यह कैसे काम करता है। आप ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि वहां एक बुनियादी विरोधाभास है; आप रहस्य के क्षेत्र में हैं। यह ईसा मसीह के दो स्वभावों के समान है। एक ही व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य थे - दो प्रकृतियाँ, एक व्यक्ति। आप जानते हैं कि आप ऐसा कह सकते हैं, लेकिन आप इसे कैसे समझाते हैं? यह काफी कठिन है। आप यह समझा सकते हैं कि यह क्या नहीं है, जैसे कि ईसाई सूत्रीकरण - यह यह नहीं है, और यह वह नहीं है, यह कुछ और नहीं है। इसी तरह, जब आप धर्मग्रंथ की प्रेरणा और धर्मग्रंथ की रचना में दैवीय और मानवीय तत्वों के प्रश्न पर पहुंचते हैं, तो यह दोनों है, लेकिन साथ ही यह भगवान का शब्द भी है। हम प्रेरणा के एक जैविक दृष्टिकोण के बारे में बात करते हैं जिसमें व्यक्ति, उनकी शिक्षा और पृष्ठभूमि शामिल होती है, जो अक्सर सामने आती है, फिर भी यह किसी भी तरह से पवित्रशास्त्र के दिव्य चरित्र से अलग नहीं होती है। यह परमेश्वर का वचन है। आप उसे कैसे समझाएंगे? मुझे नहीं लगता कि आप इसे पूरी तरह से समझा सकते हैं, लेकिन इसमें

दिव्य और मानव की परस्पर क्रिया है। ऐसा लगता है कि इस बिंदु पर आपको थोड़ा पीछे हटना होगा।

उत्पत्ति 22 में ऐसा कोई आवश्यक निष्कर्ष नहीं है जो सराहनीय हो, लेकिन एक संबंध है: क्योंकि आपने यह किया है, ये वादे यहां हैं। उसने इब्राहीम में उन परिस्थितियों पर काम किया है ताकि वह वादे की पूरी घोषणा का हिस्सा हो, कि वह उन चीजों को करेगा, लेकिन यह सिर्फ एक सुझाव है।

उत्पत्ति 17:9-14 खतना - वाचा का चिन्ह

हम अपने आध्यात्मिक पिता के रूप में अब्राहम के बारे में बात कर रहे हैं। हमने इन चार अनुच्छेदों को देखा जो इब्राहीम की वाचा की बात करते हैं। इब्राहीम के साथ परमेश्वर की वाचा उत्पत्ति 17:9-14 में है। हम पहले ही अध्याय 17 के पहले भाग को देख चुके हैं, लेकिन आइए वापस जाएं और छंद 9-14 को देखें। हम वहां पढ़ते हैं: “ और परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, “इसलिये तू और तेरे वंश पीढ़ी पीढ़ी तक मेरी वाचा का पालन करना। यह मेरी वाचा है, जिसे तू मेरे और तेरे, और तेरे पश्चात् तेरे वंश के बीच में मानना; तुम में से हर एक लड़के का खतना किया जाएगा। और अपनी खलड़ी का खतना करना; और यह मेरे और तुम्हारे बीच वाचा का प्रतीक होगा। और तुम्हारी पीढ़ियों में से जो कोई आठ दिन का हो, उसका खतना किया जाए, चाहे वह किसी के घर में उत्पन्न हो, वा किसी परदेशी के हाथ से मोल लिया गया हो, जो तुम्हारी सन्तान का न हो। जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो, और जो तेरे रूपके से मोल लिया गया हो, उसका खतना अवश्य किया जाए; और मेरी वाचा तुम्हारे शरीर में सदा की वाचा बनी रहेगी। और जिस खतनारहित लड़के की खलड़ी का खतना न किया गया हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए; उसने मेरा अनुबंध तोड़ दिया है।”

अतः इब्राहीम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के साथ उसकी और उसके वंश की ओर से एक दायित्व आया। खतना ईश्वर और इब्राहीम के बीच वाचा का प्रतीक या संकेत बनना है, जिसे आप पद 11 में पढ़ते हैं: “तू अपनी खलड़ी का खतना करना; और यह मेरे और तुम्हारे बीच वाचा का चिन्ह होगा।” हम पाते हैं कि श्लोक 11 में इब्राहीम को अपना खतना करना पड़ा, और उसके बाद

उसके घर के प्रत्येक लड़के का, और न केवल उसके अपने बच्चों का, बल्कि दासों सहित, उसके अधीन रहने वाले सभी लोगों का खतना करना पड़ा। फिर पद 14 में यह प्रभावशाली कथन, जो कहता है कि ऐसा न करना वाचा को तोड़ना है: “और जिस खतनारहित लड़के की खलड़ी का खतना न किया गया हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए; उसने मेरी वाचा तोड़ दी है।” इसलिए खतना को बहुत गंभीरता से लिया जाना था।

आपको बाद में पता चलेगा कि जब मूसा ने खतने की रस्म की उपेक्षा की तो यहोवा ने इसे कितनी गंभीरता से लिया। निर्गमन 4:24-25 में जब मूसा मिस्र लौट रहा था: “और ऐसा हुआ कि सराय के मार्ग में यहोवा ने उससे भेंट की, और उसे मार डालना चाहा। तब सिप्पोरा ने एक चोखा पत्थर लिया, और अपने बेटे की खलड़ी को काटकर उसके पांवों पर रखकर कहा, निःसन्देह तू मेरा खूनी पति है। और इस प्रकार यहोवा ने उसे जाने दिया।”

ऐसा लगता है कि मामला यह था कि मूसा ने अपने बेटे का खतना नहीं किया था, और यहोवा ने उसके जीवन को धमकी दी थी क्योंकि उसने ऐसा नहीं किया था। उपेक्षा का परिणाम, जैसा कि अध्याय 17 में कहा गया है, यह है: “वह आत्मा अपने लोगों से अलग कर दी जाएगी।” यह निर्गमन 12:15-19 में अखमीरी रोटी के पर्व के संदर्भ में है: “सात दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाया करना, और पहिले दिन अपने अपने घरों में से खमीर निकालना।” क्योंकि जो कोई पहिले दिन से लेकर सातवें दिन तक खमीरी रोटी खाए वह प्राणी इस्राएल में से नाश किया जाए।” वहां आपका संबंध न केवल खतना से है, बल्कि अखमीरी रोटी के पर्व से भी है जो फसह से जुड़ा था। यदि इसका उल्लंघन किया जाए तो वह आत्मा इस्राएल से अलग कर दी जाएगी।

इस बात पर कुछ चर्चा है कि इसका क्या मतलब है: “अपने लोगों से अलग हो जाना,” या “इज़राइल से अलग हो जाना।” क्या इसका मतलब यह है कि इस व्यक्ति को फाँसी दे दी जाएगी? क्या इसका मतलब मौत है? या इसका मतलब बहिष्कार है? टिप्पणीकार इस पर विभाजित हैं। निर्गमन 31:14 कहता है: “इसलिये तुम विश्रामदिन मानना; क्योंकि यह तुम्हारे लिये पवित्र है। जो कोई उसे अशुद्ध करे वह निश्चय मार डाला जाए; क्योंकि जो कोई उस में कुछ काम करे वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाएगा।” वहाँ समान्तर सुझाव देता है कि “अपने लोगों के बीच से काट

दिए जाने" का अर्थ है मृत्यु। यदि आप इसे इन अन्य अनुच्छेदों, अखमीरी रोटी की दावत या खतना पर लागू करते हैं, तो आप अभी भी नहीं जानते कि उस सज़ा का प्रबंध कौन करेगा। क्या यहोवा कह रहा है कि वह किसी तरह से ऐसा करेगा? या यह समुदाय की ज़िम्मेदारी है? वह वर्णित नहीं है। लेकिन खतना करने की आज्ञा के साथ जो मंजूरी शामिल है वह उस गंभीरता पर जोर देती है जिसके साथ भगवान ने इसे लेने का इरादा किया था।

इब्राहीम के समय से पहले भी, अन्य लोगों के बीच एक संस्कार के रूप में खतना का अभ्यास किया जाता था। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी उत्पत्ति उत्पत्ति 17 में हुई जब आज्ञा इब्राहीम को दी गई थी। इसकी उत्पत्ति इज़राइल से नहीं हुई थी, लेकिन यह उस समय इब्राहीम के साथ भगवान की वाचा के संकेत के रूप में उत्पन्न हुई थी। खतना कुछ ऐसा नहीं था जो अन्य लोगों के बीच अज्ञात था, इसलिए भगवान ने इसे अब्राहम को एक नए और विशेष महत्व के साथ दिया। यिर्मयाह 9:25 कहता है: “वे दिन आ रहे हैं;” यहोवा की यह वाणी है, “जब मैं मिस्र, यहूदा, एदोम, अम्मोन और मोआब, और जंगल में रहने वाले सभी लोगों को, जिनका केवल शरीर का खतना हुआ है, दण्ड दूँगा। सुदूर स्थान. क्योंकि ये सब जातियां सचमुच खतनारहित हैं, वरन इस्राएल का सारा घराना भी मन में खतनारहित है।” वह परिच्छेद दर्शाता है कि कैसे खतना ऐसी चीज़ नहीं थी जो इज़राइल के लिए अनोखी थी। मिस्रियों ने इसे किया, एदोमियों ने किया, अम्मोनियों ने किया, और मोआबियों ने किया। यह सर्वविदित है कि अन्य लोग भी खतना का अभ्यास करते थे। हालाँकि, यिर्मयाह यहाँ जिस बारे में बात कर रहा है वह यह है कि भले ही कुछ इस्राएलियों का बाहरी तौर पर खतना किया गया है, लेकिन वास्तव में, शब्द के सही अर्थ में, उनका खतना नहीं हुआ है।

हृदय का खतना संस्कार का यह परिचय इब्राहीम वाचा के संबंध में पाया जाता है। अनुबंध के संकेत के रूप में इसका महत्व है और आंतरिक सफाई की आवश्यकता की ओर इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, अधिकांश लोग महसूस करते हैं कि खतना का मूल विचार अस्वच्छता को दूर करना है - इसमें प्रतीकात्मकता शामिल है। अनुष्ठान आंतरिक सफाई की आवश्यकता की ओर इशारा करता है। पाप एक जाति का मामला है; यह एक ऐसी चीज़ है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है। पाप की अशुद्धता दूर होनी चाहिए। इब्राहीम से शारीरिक वंश किसी को ईश्वर का सच्चा

बच्चा बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है; वह आंतरिक शुद्धि होनी चाहिए। तो खतना एक बाहरी संकेत बन जाता है जो आंतरिक रूप से होना चाहिए - हृदय का खतना। हृदय के खतने का विचार भी पुराने नियम में निहित है। व्यवस्थाविवरण 10:16 कहता है: “इसलिये अपने हृदय की खाल का खतना करो, और फिर हठीले न हो जाओ। क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा देवताओं का परमेश्वर, और प्रभुओं का प्रभु, महान, पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर है, जो किसी का कुछ नहीं देखता, और न प्रतिफल लेता है।”

और व्यवस्थाविवरण 30:6 कहता है: “और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखे, जिस से तू जीवित रहे।”

यदि आप नए नियम पर जाएं, तो आप रोमियों 4 में पाते हैं, पॉल रोमियों 4:8 से शुरू होने वाले खतने की चर्चा करता है: “धन्य है वह मनुष्य जिस पर प्रभु पाप का दोष न लगाए। यह आशीष केवल खतनावालों को ही मिलती है, या खतनारहितों को भी? क्योंकि उसका विश्वास इब्राहीम के लिये धार्मिकता गिना गया।” इब्राहीम के लिए विश्वास धार्मिकता गिना जाता था, परन्तु उसका खतना होने से पहले। “तब यह कैसे गिना गया, जब वह खतना में था या गैर-खतना में था? खतना में नहीं, परन्तु खतना रहित में” (रोमियों 4:10)। फिर पद 11 बताता है कि खतना वास्तव में क्या है: “और उस को खतने का चिन्ह, अर्थात् उस विश्वास की धार्मिकता की मुहर, जो उस ने बिन खतने की दशा में भी पाया या, पाया; ताकि वह उन सब का पिता ठहरे जो विश्वास करते हैं, चाहे उनका खतना न हुआ हो; ताकि उन पर भी धार्मिकता का आरोप लगाया जा सके। और उन खतनेवालों का पिता, जो न केवल खतनेवालों में से हैं, पर हमारे पिता इब्राहीम के उस विश्वास की सी चाल पर भी चलते हैं, जो उस ने बिन खतने की ओर से किया था।

इसलिए खतना से कोई भी नहीं बचता है, चाहे पुराने नियम में हो या नए नियम में (यदि आप बपतिस्मा द्वारा खतना की सादृश्यता का अनुसरण करते हैं जब इसे शिशुओं पर लागू किया जाता है)। लेकिन यह वाचा का एक संकेत है, और इस तरह बच्चों को पारित किया जाना है। महत्वपूर्ण बात केवल संकेत ही नहीं है, बल्कि उस प्रावधान में विश्वास है जो ईश्वर व्यक्ति की शुद्धि के लिए करेगा।

उत्पत्ति 22 - अकेदा, इसहाक का बंधन आइए उत्पत्ति 22 में इब्राहीम के विश्वास के उच्च बिंदु पर चलते हैं - जब भगवान इब्राहीम का परीक्षण करते हैं। उत्पत्ति 22:1 कहता है, “कुछ समय बाद परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा ली। उसने उससे कहा, “इब्राहीम!” “मैं यहाँ हूँ,” उसने उत्तर दिया। तब परमेश्वर ने कहा, “अपने पुत्र, अर्थात् अपने एकलौते पुत्र, इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरियाह के क्षेत्र में चला जा। उसे वहाँ एक पहाड़ पर, जिसके विषय में मैं तुझे बताऊंगा, होमबलि करके चढ़ाना।”

मैंने एनआईवी से पढ़ा, जो निश्चित रूप से किंग जेम्स संस्करण की तुलना में उत्पत्ति 22:1 का बेहतर अनुवाद है। केजेवी कहता है, "और इन बातों के बाद ऐसा हुआ, कि परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा की, और उस से कहा, 'अब्राहम।' और उसने कहा, 'मैं यहाँ हूँ।' मूल राजा जेम्स कहते हैं, "भगवान ने इब्राहीम को प्रलोभित किया," जो भ्रमित करने वाला हो सकता है। "टेस्ट" उस शब्द का बहुत बेहतर अनुवाद है। याकूब 1:13-14 में कहा गया है, "परमेश्वर किसी मनुष्य की परीक्षा नहीं करता, मनुष्य अपनी अभिलाषाओं से भटककर परीक्षा में पड़ता है।" परमेश्वर मनुष्य की परीक्षा करता है, परन्तु वह उसकी परीक्षा नहीं करता। शैतान प्रलोभित करता है। शैतान जीवन में ऐसे अनुभव लाता है जो आपको प्रभु से दूर करने के लिए बनाए गए हैं। भगवान ऐसा नहीं करते. वह आपके जीवन में ऐसी चीजें ला सकता है जो आपके विश्वास की परीक्षा ले सकती हैं, लेकिन इरादा मजबूत करने का है।

व्यावहारिक अर्थ में यही वह समस्या है जिसका आप प्रतिदिन अपने अनुभवों में सामना करते हैं। यदि आप अय्यूब के बारे में सोचें, तो उसने अपना परिवार और संपत्ति खो दी। वह शैतान की ओर से परीक्षा थी, क्योंकि शैतान ने यहोवा के पास आकर कहा, देख, जिस मनुष्य के बारे में तू ने कहा है वह धर्मी है, मुझे उसके साथ ये काम करने दे, और तू पाएगा कि वह गिर पड़ेगा। और प्रभु ने कहा ठीक है, कुछ सीमाओं के भीतर तुम कुछ चीजें कर सकते हो। और शैतान उसे प्रभु से दूर खींचने की कोशिश में वहाँ आया। वह उसमें सफल नहीं हुआ. हम जानते हैं कि यही चल रहा था, क्योंकि हम पाठ पढ़ सकते हैं। अय्यूब को नहीं पता था कि शैतान स्वर्गीय अदालत के सामने वहाँ आया था और उसने ऐसा करने की अनुमति मांगी थी।

आप इसे अपने अनुभवों पर लागू कर सकते हैं। आपको एक बुरा अनुभव हो सकता है और आप कह सकते हैं, “क्या हो रहा है? क्या यह शैतान मुझे प्रभु से दूर खींचने का काम कर रहा है? क्या उन्होंने इसकी पहल की है? “ठीक है, शायद उसके पास है। या हो सकता है कि प्रभु आपको मजबूत करने का प्रयास करने, और आपके विश्वास में पुष्टि करने के लिए कार्य कर रहा हो। मुझे लगता है कि भगवान हमेशा काम पर रहते हैं। और इसलिए हो सकता है कि दोनों काम पर हों, लेकिन आप वास्तव में किसी भी घटना में यह नहीं जान सकते कि आपके जीवन में इसकी शुरुआत क्यों हुई है, क्या यह मुख्य रूप से शैतान से आ रहा है या क्या यह कुछ ऐसा है जिसे प्रभु ने शुरू किया है। यहाँ, यह इब्राहीम के विश्वास को परखने और मजबूत करने के लिए है। यह अत्यंत गंभीर परीक्षा थी। अदृश्य जगत में प्रभु और शैतान के बीच युद्ध चल रहा है। वह युद्ध का मैदान हमारे अपने जीवन में और हमारे अपने अनुभवों में है, इसलिए हम उन चीजों पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं यह महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण है। हमें ईश्वर की शक्ति की तलाश करके और अनुग्रह के लिए प्रार्थना करके परीक्षणों का जवाब देना चाहिए, चाहे स्थिति कोई भी हो, लेकिन मुझे लगता है कि जीवन के संघर्षों में यह जानना उपयोगी है।

केल्विन ने, फिर से, इब्राहीम के इस परीक्षण के बारे में कुछ उपयोगी टिप्पणियाँ की हैं। पृष्ठ 563 पर वह इब्राहीम के बारे में कहता है, "उसका मन बुरी तरह से कुचला गया होगा और हिंसक रूप से उत्तेजित हो गया होगा जब परमेश्वर की आज्ञा और प्रतिज्ञा उसके भीतर विरोधाभासी थी।" तो यहाँ वादा है। इसहाक, इब्राहीम का पुत्र है, जो उस वादे को पूरा करता है जिसे भगवान ने पुष्टि की थी। उसका वंश इश्माएल के द्वारा नहीं होगा; यह इसहाक के द्वारा होगा। इन वादों की बार-बार पुष्टि की गई है, और अब भगवान आते हैं और उस बेटे को मारने के लिए कहते हैं जो वादे की संतान है। केल्विन कहते हैं: “आदेश और वादा परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। लेकिन जब वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जिस ईश्वर के साथ वह जानता था कि उसे क्या करना है वह उसका विरोधी नहीं हो सकता। हालाँकि उन्हें तुरंत पता नहीं चला कि विरोधाभास को कैसे दूर किया जा सकता है। फिर भी उसने आशा के द्वारा आदेश को वादे के साथ मिला लिया। क्योंकि यह आश्चर्य होने के बाद कि ईश्वर वफादार है, उसने अज्ञात मुद्दे को ईश्वरीय विधान पर छोड़ दिया। इस बीच, बंद आंखों के साथ, वह वहीं जाता है जहां उसे निर्देशित किया जाता है। ईश्वर का सत्य इस सम्मान का पात्र है।

इतना ही नहीं, इसे सभी मानवीय साधनों से बहुत आगे जाना चाहिए ताकि यह अकेले ही, मेरे बिना भी, पर्याप्त हो। लेकिन यह भी कि यह सभी बाधाओं को पार कर जाएगा।” इब्राहीम के लिए यह भूलना कठिन और दर्दनाक था कि वह एक पिता और एक पति था, और सभी मानवीय स्नेह को त्यागकर, और अपने बेटे का जल्लाद बनकर दुनिया के सामने शर्मनाक क्रूरता का अपमान सहन कर रहा था। लेकिन, दूसरी कहीं अधिक गंभीर और भयानक चीज़ थी। अर्थात् यह कि उसने ईश्वर की कल्पना अपने ही शब्दों में स्वयं का खंडन करने के लिए की थी। और फिर वह मानता है कि जब इसहाक को अद्भुत अनुग्रह से दूर कर दिया जाएगा तो वादा किए गए आशीर्वाद की आशा उससे दूर हो जाएगी। हम इब्रानियों 11:17-19 से जानते हैं कि यह इब्राहीम द्वारा विश्वास का कार्य था; वह वही करने लगा जो परमेश्वर ने उसे करने की आज्ञा दी थी। इब्रानियों 11:17 कहता है: "विश्वास ही से इब्राहीम ने परखे जाने के समय इसहाक को बलि चढ़ाया; और जिस ने प्रतिज्ञाएं पाईं, उसने अपने एकलौते पुत्र को भी बलि चढ़ाया, जिसके विषय में कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; यह ध्यान में रखते हुए कि परमेश्वर उसे मृतकों में से भी जीवित करने में सक्षम था; उसने उसे एक आकृति में कहाँ से प्राप्त किया।” यहाँ परीक्षण इब्राहीम के विश्वास का परीक्षण है।

हम कल यहां से आएंगे।

लौरा नॉक्स द्वारा लिखित

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित

जेनिफर बॉबज़िन द्वारा अंतिम संपादन

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया